

गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला

२३

ॐ नमः

श्रीमन्महाकविकालिदासप्रणीतः

श्रुतबोधः

‘करुणा’ संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः



चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० ३२

वाराणसी (भारत)

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्रीः ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला

२३



श्रीमन्महाकविकालिदासप्रणीतः

श्रुतबोधः

‘करुणा’ संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः

लेखकः

कन्हैयालाल जोशी

एम० ए० वेदालंकार, साहित्य-आयुर्वेदरत्न

गोधुमन्युक्तमञ्जर

परीक्षा कक्षा, दिल्ली-११०००६



चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० ३२

वाराणसी (भारत)

प्रकाशक—

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्राच्यविद्या एवं दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक एवं विक्रेता

पो० आ० चौखम्भा, पो० बा० नं० ३२

गोकुल भवन के० ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी-२२१००१ (भारत)

टेलीफोन : ६३०२२

टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

© चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्रथम संस्करण १९७७

मूल्य रु० १-७५

अन्यतम प्राप्तिस्थान :—

चौखम्भा विश्वभारती

चीक (चित्रा सिनेमा के सामने)

वाराणसी

फोन : ६५४४४

GOKULDAS SANSKRIT SERIES

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

NO. 23

ŚRUTABODHA

OF

MAHĀKAVI KALIDĀS

With

‘Karuṇā’ Sanskrit-Hindi Commentary

By

K. L. JOSHI, M. A., Vedālaṅkāra

Sāhitya-Āyurveda Ratna

CHAUKHAMBHĀ ORIENTALIA

VARANASI (INDIA)

Publishers :

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

A House of Oriental and Antiquarian Books

P. O. Chaukhambha, Post Box No. 32

Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane

VARANASI-221001 (India)

Telephone : 63022

Telegram : Gokulotsav

© Chaukhambha Orientalia

First Edition 1977

Price Rs. 9-75

Printers—Vidya Vilas Press, Varanasi.

प्राक्कथन

शिक्षाकल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्यौतिषां गणः ।

छन्दो विचित्रिरित्येतैः षडङ्गो वेद सच्यते ॥

इससे स्पष्ट है कि वेदाङ्गरूप छन्दशास्त्र का महत्त्व अत्यन्त प्राचीन है । यहाँ तक कि वेदवाणी स्वयं छन्दोबद्धरूप में ऋषियों के मुख से विनिस्तृत हुई है । अग्निपुराण का कथन है—छन्द शास्त्र वेद का पाद है अर्थात् उसका पूरक है—‘छन्दः पादौ तु वेदस्य’ अर्थात् जैसे बिना पैरों के मनुष्य पङ्ख-चलने में असमर्थ अर्थात् गति-क्रिया से हीन होता है, उसी प्रकार वेद भी छन्दशास्त्र के बिना पङ्ख है, अतएव लौकिक काव्य जगत् में भी छन्दशास्त्र से अनभिज्ञ पुरुष पङ्ख ही है ।

छन्दशास्त्र की महत्ता से भाषा में लालित्य एवं अर्थवैचित्र्य की सृष्टि होती है । पद्य की रचना चरण से होती है अतः पद्य की व्युत्पत्ति की गयी है—‘पदं अर्हतीति पद्यम्’ । अतएव इसके आधार पर वृत्तमात्र को पद्य कहा गया है । वृत्तरत्नाकर के अनुसार इस वृत्त के तीन भेद स्वीकार किये गये हैं—(१) सम, (२) अर्धसम, (३) विषम । जिस पद्य में चारों चरण समान होते हैं वह प्रथम प्रकार का छन्द है, जिसके दो-दो चरण समान होते हैं, वह अर्धसम और जिसमें चारों ही चरण भिन्न-भिन्न होते हैं वह विषमवृत्त कहा जाता है । उन चरणों में स्थान-स्थान पर विराम होता है जिसे ‘यति’ कहते हैं—‘यति-र्विच्छेदसंज्ञिता’ । इस यति के कारण पद्य के लय में माधुर्य की वृद्धि होती है और यह अर्थ के अनुसन्धान में भी सहायक होता है, क्योंकि छन्दोबद्ध रचना में कवि सर्वथा स्वतन्त्र होता है अतः जैसा चाहता है उस प्रकार शब्दों को चरणों में रख देता है । यति के माध्यम से हम पद्य के लय को तथा उसके अर्थ को सुगमतया जान पाते हैं ।

‘श्रुतबोध’ लौकिक छन्दशास्त्र का अनुपम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की संज्ञा ही इस बात का प्रतीक है कि यह ग्रन्थ इन्द्रवज्रादि सभी वृत्तों का निरूपण इतने सरल ढङ्ग से प्रतिपादित करता है कि उसके श्रवणमात्र से ही वह शीघ्र बोधगम्य हो जाता है।

परन्तु इस सार्थक नामवाले ग्रन्थ का प्रणेता कौन है ? इस विषय में अद्यावधि कुछ कहना कठिन ही है, इसकी ललित पदावली को देखकर इसको महाकवि कालिदास की रचना बताया जाता है। परन्तु यह भी प्रश्न जिज्ञास्य है कि क्या रघुवंश-कुमारसंभवादि के प्रणेता वह महाकवि कालिदास ही श्रुतबोधकार है अथवा उनसे भिन्न कोई अन्य कालिदास महाकवि के नाम से विख्यात है। यदि वह रघुवंशादि काव्यों के प्रणेता से भिन्न है, तो उस महाकवि के भी अन्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं अथवा नहीं ? इस विषय में किसी ऐकान्तिक निर्णय पर पहुँचना सम्भव नहीं है तथापि अनेक विद्वान् श्रुतबोध में प्रयुक्त शृङ्गारमय शैली को देखकर कुमारसंभवादि शृङ्गारिक काव्यों का स्मरण करते हुए इस ग्रन्थ के साथ भी उसी महाकवि का नाम ही जोड़ने की चेष्टा करते हैं परन्तु इस जिज्ञास्य विषय को विवादास्पद ही समझना चाहिए।

श्रुतबोध के श्रवणमात्र से गम्य होने का कारण यह भी है कि इसमें छन्दों के लक्षण श्लोकबद्ध रूप में ही है, जिसमें तदनुरूप उदाहरण भी घटित होते हैं। छन्दों में यति का निर्देश करने के लिए प्रायः रुद (एकादश), दिक् (दश), अश्व (सप्त) रस (षट्) युग (चार) इत्यादि विभिन्न रोचक पदों का प्रयोग किया गया है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत लघु ग्रन्थ छन्दशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है और काव्य जिज्ञासुओं के लिए तृप्तिदायक है। हमने अपनी व्याख्या में यह प्रयत्न किया है कि श्रुतबोध के लक्षणों के साथ-साथ छन्दोमञ्जरी एवं वृत्तरत्नकार के भी छोटे लक्षण दिये जायँ तथा उनके सरल उदाहरण भी दिये जायँ जिससे यह अपने नाम को अधिकाधिक सार्थक कर सके और छात्रों के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हो सके।

मोड़ासा, सावरकोठा (गुजरात)
 डी० २२/१० चौसठ्ठीघाट वाराणसी

क० जोशी

छन्दानुक्रमणिका

	श्लोक सं०	पृष्ठाङ्क		श्लोक सं०	पृष्ठाङ्क
ग्रन्थप्रतिज्ञा	१	१	आख्यानक्री	२३	१४
ह्रस्वदीर्घज्ञान	२	१	रथोद्धता	२४	१४
गणस्वरूप	३	२	स्वागता	२५	१५
आर्याछन्द	४	३	वैश्वदेवी	२६	१६
गीति	५	४	तोटक	२७	१६
उपगीति	६	४	भुजङ्ग प्रयात	२८	१७
पङ्क्ति	७	५	द्रुतविलम्बित	२९	१७
शशिवदना	८	५	प्रमिताक्षरा	३०	१८
मदलेखा	९	६	हरिणीप्लुता	३१	१९
अनुष्टुप्	१०	६	वंशस्थ	३२	१९
पद्य	११	६	ह्रन्दवंशा	३३	२०
माणवकक्रीड	१२	७	प्रभावती	३४	२१
नगस्वरूपिणी	१३	८	प्रहर्षिणी	३५	२१
विद्युन्माला	१४	८	वसन्ततिलका	३६	२२
चम्पकमाला	१५	९	मालिनी	३७	२३
मणिबन्धः	१६	९	हरिणी	३८	२३
शालिनी	१७	१०	शिखरिणी	३९	२४
हंसी	१८	११	पृथ्वी	४०	२५
दोधक	१९	११	मन्दाक्रान्ता	४१	२५
ह्रन्दवज्रा	२०	१२	शार्दूलविक्रीडितम्	४२	२७
उपेन्द्रवज्रा	२१	१२	स्रग्धरा	४३	२८
उपजाति	२२	१३			

‘श्रुतबोध’ लौकिक छन्दशास्त्र का अनुपम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की संज्ञा ही इस बात का प्रतीक है कि यह ग्रन्थ इन्द्रवज्रादि सभी वृत्तों का निरूपण इतने सरल ढङ्ग से प्रतिपादित करता है कि उसके श्रवणमात्र से ही वह शीघ्र बोधगम्य हो जाता है।

परन्तु इस सार्थक नामवाले ग्रन्थ का प्रणेता कौन है ? इस विषय में अद्यावधि कुछ कहना कठिन ही है, इसकी ललित पदावली को देखकर इसको महाकवि कालिदास की रचना बताया जाता है। परन्तु यह भी प्रश्न जिज्ञास्य है कि क्या रघुवंश-कुमारसंभवादि के प्रणेता वह महाकवि कालिदास ही श्रुतबोधकार है अथवा उनसे भिन्न कोई अन्य कालिदास महाकवि के नाम से विख्यात है। यदि वह रघुवंशादि काव्यों के प्रणेता से भिन्न है, तो उस महाकवि के भी अन्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं अथवा नहीं ? इस विषय में किसी ऐकान्तिक निर्णय पर पहुँचना सम्भव नहीं है तथापि अनेक विद्वान् श्रुतबोध में प्रयुक्त शृङ्गारमय शैली को देखकर कुमारसंभवादि शृङ्गारिक काव्यों का स्मरण करते हुए इस ग्रन्थ के साथ भी उसी महाकवि का नाम ही जोड़ने की चेष्टा करते हैं परन्तु इस जिज्ञास्य विषय को विवादास्पद ही समझना चाहिए।

श्रुतबोध के श्रवणमात्र से गम्य होने का कारण यह भी है कि इसमें छन्दों के लक्षण श्लोकबद्ध रूप में ही है, जिसमें तदनुरूप उदाहरण भी घटित होते हैं। छन्दों में यति का निर्देश करने के लिए प्रायः रुद्र (एकादश), दिक् (दश), अश्व (सप्त) रस (षट्) युग (चार) इत्यादि विभिन्न रोचक पदों का प्रयोग किया गया है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत लघु ग्रन्थ छन्दशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है और काव्य जिज्ञासुओं के लिए तृप्तिदायक है। हमने अपनी व्याख्या में यह प्रयत्न किया है कि श्रुतबोध के लक्षणों के साथ-साथ छन्दोमञ्जरी एवं वृत्तरत्नकार के भी छोटे लक्षण दिये जायें तथा उनके सरल उदाहरण भी दिये जाएँ जिससे यह अपने नाम को अधिकाधिक सार्थक कर सके और छात्रों के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हो सके।

मोड़ासा, सावरकाँठा (गुजरात)

डी० २२/१० चौसठौघाट वाराणसी

क० जोशी

छन्दानुक्रमणिका

	श्लोक सं०	पृष्ठाङ्क		श्लोक सं०	पृष्ठाङ्क
ग्रन्थप्रतिज्ञा	१	१	आख्यानक्री	२३	१४
ह्रस्वदीर्घज्ञान	२	१	रथोद्धता	२४	१४
गणस्वरूप	३	२	स्वागता	२५	१५
आयच्छिन्द	४	३	वैश्वदेवी	२६	१६
गीति	५	४	तोटक	२७	१६
उपगीति	६	४	भुजङ्ग प्रयात	२८	१७
पङ्क्ति	७	५	द्रुतविलम्बित	२९	१७
शशिवदना	८	५	प्रमिताक्षरा	३०	१८
मदलेखा	९	६	हरिणीप्लुता	३१	१९
अनुष्टुप्	१०	६	वंशस्थ	३२	१९
पद्य	११	६	इन्द्रवंशा	३३	२०
माणवकक्रीड	१२	७	प्रभावती	३४	२१
नगस्वरूपिणी	१३	८	प्रहर्षिणी	३५	२१
विद्युन्माला	१४	८	वसन्ततिलका	३६	२२
चम्पकमाला	१५	९	मालिनी	३७	२३
मणिवन्धः	१६	९	हरिणी	३८	२३
शालिनी	१७	१०	शिखरिणी	३९	२४
हंसी	१८	११	पृथ्वी	४०	२५
दोधक	१९	११	मन्दाक्रान्ता	४१	२५
इन्द्रवज्रा	२०	१२	शार्दूलविक्रीडितम्	४२	२७
उपेन्द्रवज्रा	२१	१२	स्रग्धरा	४३	२८
उपजाति	२२	१३			

महाकविश्रीकालिदासविरचितः

श्रुतबोधः

‘करुणा’ संस्कृत-हिन्दीटीकासमुपेतः

ग्रन्थ प्रतिज्ञा

छन्दसां लक्षणं येन श्रुतमात्रेण बुध्यते ।

तमहं सम्प्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥ १ ॥

अन्वयः—अहं, तं, श्रुतबोधम्, अविस्तरं, सम्प्रवक्ष्यामि, येन श्रुतमात्रेण छन्दसां लक्षणं बुध्यते ।

व्याख्या—अहं = कालिदासनामा, ग्रन्थप्रणेतृत्यर्थः । तं श्रुतबोधं = तन्नाम छन्दःशास्त्रं, अविस्तरम् = न विद्यते विस्तरः यस्मिन् सोऽविस्तरस्तदविस्तरम्, लघुकलेवरसंयुतमित्यर्थः । सम्प्रवक्ष्यामि = कथयिष्यामि । येन = ग्रन्थेन, श्रुतमात्रेण = श्रवणेनैव, अनायासेनैवेति यावत् । छन्दसाम् = आर्यानुष्टुबादीनां, लक्षणं = गुरुलघुवर्णमात्रागणारूपं लक्षणं, बुध्यते = ज्ञायते ।

भाषार्थः—मैं उस श्रुतबोध नामक संक्षिप्त छन्दशास्त्र का वर्णन करूँगा, जिसके श्रवणमात्र से ही आर्या-अनुष्टुप् आदि विविध छन्दों का गुरुलघुवर्णारूप लक्षण का बोध हो जाता है ॥ १ ॥

ह्रस्वदीर्घयोर्ज्ञानम्

संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गसम्मिश्रम् ।

विज्ञेयमक्षरं गुरु पादान्तस्य विकल्पेन ॥ २ ॥

अन्वयः—संयुक्ताद्यम्, सानुस्वारम्, विसर्गसम्मिश्रम्, अक्षरं पादान्तस्थं (अक्षरं च) विकल्पेन गुरु विज्ञेयम् ।

व्याख्या—संयुक्तस्य = संयोगीभूतस्य, आद्यम् = प्रथमं, यथा ‘सत्य’ इति शब्दे स गुरुः । दीर्घम् = द्विमात्रिकवर्णम्^१ । अनुस्वारेण सहितं सानुस्वारम् विसर्गेण

१. एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रकम् ॥

ह्रस्व स्वर—अ, इ, उ, ऋ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ । दीर्घ स्वर—आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ ।

सम्मिश्रं विसर्गसंयुक्तमित्यर्थः, यथा कः, सः इत्यादि । पादान्तस्थं = चरणान्तस्थं, अक्षरं = वर्णः, विकल्पेन गुरु विज्ञेयम् = ज्ञातव्यम् । पादान्ते क्वचित् गुरुरपि लघु स्याल्लघुरपि गुरुः स्यादिति भावः । अयं क्रमः द्वितीयचतुर्थपादयोः दृश्यते, परं वसन्ततिलकादिषु प्रथमतृतीयपादयोरपि दृश्यते । अन्यत्रापि “वा पादान्ते त्वसौ वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रको लघुः” ।

भाषार्थः—संयुक्त वर्णों में प्रथम रहने वाला वर्ण, द्विमात्रिक वर्ण, अनुस्वार युक्त वर्ण एवं विसर्गसंयुक्त वर्ण (अक्षर) दीर्घ (गुरु) होता है और श्लोक के पादान्तस्थ वर्ण को विकल्प से गुरु जानना चाहिए (अर्थात् वह कहीं लघु भी होता है और कहीं पर गुरु भी होता है) ॥ २ ॥

गणस्वरूपम्

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम् ।

यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्^१ ॥ ३ ॥

अन्वयः—भजसा आदिमध्यावसानेषु गौरवं यान्ति । यरता लाघवं यान्ति । मनौ तु लाघवं (यातः) ।

व्याख्या—भजसा = भगणः, जगणः, सगणश्चेति । आदिमध्यावसानेषु = आदि च मध्यं चावसानं च तानि तेषु । गौरवं = गुरुतां, यान्ति = गच्छन्ति । यरताः = यगण-रगण-तगणाः । लाघवं = लघुतां यान्ति । अयमर्थः—आदिगुरु-भगणः, मध्यगुरुजगणः, अन्त्यगुरुः सगणः, आदिलघुयगणः, मध्यलघु रगणः, अन्त्य-लघुस्तगण इति । मनौ = मगणः नगणश्च, आदिमध्यावसानेषु क्रमात् गुरुतां लघुतां च यातः । सर्वगुरुमगणः सर्वलघुनगणश्च भवतीति भावः ।

१. छन्दोमञ्जरी में गणों का स्वरूप इस प्रकार दिखाया गया है—

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुयः ।

यो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितान्तलघुस्तः ॥

गणों को जानने के लिए एक सूत्र भी है जिसके आधार पर सरलता से उनका स्वरूप बोध हो जाता है—यमाताराजभानसलगाः । इसके आधार पर गणों के आठ भेद यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण का बोध तो होता है साथ ही इनके लघु-गुरु स्वरूप का भी ज्ञान होता है । जैसे यगण को जानने के लिए आगे के दो वर्णों को लेना चाहिए तो उसका स्वरूप होगा—‘यमाता’ । इसमें आदि वर्ण ह्रस्व है, अन्त्य दो गुरु हैं अतः आदि लघु को यगण जानना चाहिए । उसी प्रकार मगण-मातारा=सर्वगुरु मगण जानना चाहिए । इसी प्रकार अन्य भी जानने चाहिए ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भाषार्थः—भगण, जगण, सगण क्रमशः आदि, मध्य और अन्त्य गुरु होते हैं और यगण, रगण तथा तगण क्रमशः आदि, मध्य और अन्त्य लघु होते हैं एवं सर्वगुरु मगण तथा सर्वलघु नगण होता है ।

गणों के स्वरूप को हम इस प्रकार जान सकते हैं । गुरु का चिह्न (S) है और लघु का (।) है । यहाँ उनके देवता-फल भाव को भी दिखा रहे हैं^१

सं०	गणनाम	स्वरूप	देवता	फल	मित्रादि	शुभाशुभ
१	मगण	SSS	मही	लक्ष्मी	मित्र	शुभ
२	यगण	ISS	जल	वृद्धि	दास	शुभ
३	रगण	SIS	अग्नि	मृत्यु	शत्रु	अशुभ
४	सगण	IIS	वायु	विदेश	शत्रु	अशुभ
५	तगण	SSI	आकाश	शून्य	उदास	सम
६	जगण	ISI	रवि	रोग	उदास	अशुभ
७	भगण	SII	चन्द्र	यश	दास	शुभ
८	नगण	III	स्वर्ग	सुख	मित्र	शुभ

आर्याछन्दः

यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥ ४ ॥

अन्वयः—यस्याः प्रथमे पादे द्वादश मात्राः, तृतीये अपि तथा । द्वितीये अष्टादश, चतुर्थके पञ्चदश, सा आर्या ।

१. मो भूमिः श्रियमातनोति, य जलं वृद्धिं, र बहिर्भूतिं, ।

सो वायुः परदेशदूरगमनं, त व्योम शून्यं फलम् ॥

जः सूर्यो भयमादिधाति विपुलं, मेन्दुर्यशो निर्मलम् ।

नो नाकश्च सुखप्रदः फलमिदं प्राहुर्गणानां बुधाः ॥

व्याख्या—प्रथमे पादे = श्लोकस्य प्रथमचरणे १२ मात्राः, तृतीयेऽपि १२, द्वितीये १८, चतुर्थके १५ मात्राः स्युः सा आर्याछन्द इति ज्ञेयम् । तत्र क्रमान्मात्राः १२, १८, १२, १५ ।

भाषार्थः—जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में बारह मात्रायें हों, द्वितीय चरण में अठारह और चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ हों, उसे आर्याछन्द कहते हैं ॥ ४ ॥

गीतिः (आर्या)

आर्यापूर्वाद्धंसमं द्वितीयमपि भवति यत्र हंसगते ! ।

छन्दोविदस्तदानीं गीतिं ताममृतवाणि ! भाषन्ते ॥ ५ ॥

अन्वयः—हे हंसगते ! अमृतवाणि ! यत्र आर्यापूर्वाद्धंसमं द्वितीयमपि भवति, छन्दोविदः तदानीं, गीतिं भाषन्ते ।

व्याख्या—हंसगते ! अमृतवाणि ! इति सम्बोधने । द्वितीयम् = उत्तराद्धम् । छन्दोविदः = छन्दांसि विदन्ति जानन्तीति छन्दोविदः = छन्दशास्त्रवेत्तारः । एवं गीतिचरणेषु क्रमान्मात्राः १२, १८, १२, १८ बोधव्याः, यथा अस्मिन्नेव श्लोके ।

भाषार्थः—हे हंससदृश गतिवाली ! हे मधुरभाषिणि ! जिस छन्द में पूर्वाद्धं और उत्तराद्धं आर्या छन्द के पूर्वाद्धं के समान अर्थात् १२ और १८ मात्राओं वाले होते हैं, उसे छन्दशास्त्र के पण्डित गीति छन्द कहते हैं । इस प्रकार यह गीतिछन्द क्रमशः १२, १८, १२, १८ मात्राओं का होता है ॥ ५ ॥

उपगीतिः (आर्या)

आर्योत्तराद्धंतुल्यं प्रथमाद्धमपि प्रयुक्तं चेत् ।

कामिनि ! तामुपगीतिं प्रकाशयन्ते महाकवयः ॥ ६ ॥

अन्वयः—हे कामिनि ! (यस्य) प्रथमाद्धमपि, आर्योत्तराद्धंतुल्यं प्रयुक्तं चेत् । महाकवयः ताम् उपगीतिं प्रकाशयन्ते ।

व्याख्या—यस्य छन्दसः प्रथमाद्धमपि = पूर्वाद्धमुत्तराद्धं चेत्यर्थः, आर्योत्तराद्धंतुल्यं = आर्याया उत्तराद्धसदृशं प्रयुक्तं भवति, महाकवयः = छन्दःशास्त्र-पारङ्गताः, तामुपगीतिं प्रकाशयन्ते = प्रकटीकुर्वन्ते कथयन्त इति भावः । तत्र क्रमान्मात्राः भवन्ति—१२, १५, १२, १५ इति ।

१. श्लोकान्तर्गत मात्राओं के गणना का नियम-ह्रस्व दीर्घ और प्लुत की मात्राओं से ही है । यथा—‘यस्याः पादे प्रथमे’ इस प्रथम चरण में द्वादश मात्राएँ हैं । इस प्रकार लक्षणान्तर्गत ही उदाहरण भी जानना चाहिये ।

भाषार्थः—जिस छन्द के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनों ही आर्या छन्द के उत्तरार्द्ध के सदृश हों अर्थात् जिसके प्रथम और तृतीय चरण में १२ मात्राएँ हों, तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में १५ मात्राएँ हों, उसे महाकवि लोग उपगीति कहते हैं ॥ ६ ॥

पंक्तिच्छन्दः

आद्यचतुर्थ पञ्चमकं चेत् ।

यत्र गुरु स्यात्साक्षरपंक्तिः ॥ ७ ॥

अन्वयः—चेत् यत्र, आद्यं, चतुर्थं, पञ्चमकं गुरु स्यात्सा अक्षरपंक्तिः ।

व्याख्या—यत्र = यस्यां वृत्ती, आद्यं = प्रथमं, चतुर्थं पञ्चमकं गुरु स्यात् सा अक्षरपंक्ति ज्ञेया । अत्र अक्षरशब्दः पादपूरणार्थः । यथा वृत्तरत्नाकरे—भोगा-
विति पंक्तिः । यथा—

आद्यचतुर्थं । पञ्चमकं चेत् ।

S I I S S S I I S S

भाषार्थः—जिस छन्द में प्रथम, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण गुरु (S) हो, उसे पंक्ति (अक्षरपंक्ति) छन्द कहते हैं । (इस छन्द के प्रत्येक चरण में पाँच अक्षर होते हैं, क्रमशः—भगण, और दो गुरु) ॥ ७ ॥

शशिवदनाछन्दः

अगुरु चतुष्कं भवति गुरु द्वौ ।

घनकुचयुग्मे ! शशिवदनाऽसौ ॥ ८ ॥

अन्वयः—घनकुचयुग्मे ! (यस्मिन्) चतुष्कम् अगुरु भवति (अनन्तरं) द्वौ गुरु (भवतः) शशिवदना असौ ।

व्याख्या—हे घनकुचयुग्मे ! यत्र = यस्मिन् वृत्ती चतुष्कं = वर्णचतुष्टयम्, अगुरु = लघु भवति, अनन्तरं द्वौ वर्णौ पञ्चमषष्ठी इति । गुरु = अहस्वी भव-
त्तस्तत्र शशिवदना ज्ञेया । चतुष्केष्वपि चरणेषु इदं लक्षणं योज्यम् । यथा—

अगुरु चतुष्कं । भवति गुरु द्वौ ।

I I I S S I I I S S

तथैव वृत्तरत्नाकरेऽपि—शशिवदना न्यौ ।

I I I S S

भाषार्थः—हे सघन स्तनोवाली ! जिस छन्द में प्रथम चार वर्ण लघु (।) हों तथा पंचम और षष्ठ गुरु हों, उसे शशिवदना छन्द कहते हैं । (इस छन्द में प्रत्येक चरण में छः अक्षर होते हैं जिसमें क्रमशः, नगण और यगण होते हैं) ॥ ८ ॥

मदलेखाछन्दः

तुर्यं पञ्चमकं चेद्यत्र स्याल्लघु बाले !

विद्वद्भिर्मृगनेत्रे ! प्रोक्ता सा मदलेखा ॥ ९ ॥

अन्वयः—हे मृगनेत्रे, बाले ! चेत् यत्र, तुर्यं, पञ्चमकं लघु स्यात्, सा विद्वद्भिः मदलेखा प्रोक्ता ।

व्याख्या—मृगस्य नेत्रे इव नेत्रे यस्याः सा, तत्सम्बुद्धी । बाले = नव-
यीवने ! चेत् = यदि, यत्र = यस्यां वृत्ती, तुर्यम् = चतुर्थम्, पञ्चमकं = पञ्चमं,
लघु = ह्रस्वः, स्यात्सा विद्वद्भिः = शास्त्रज्ञैः, मदलेखा प्रोक्ता = कथिता । यथा—

तुर्यं पञ्चमकं चेत् । यत्र स्याल्लघु बाले ।

SSS ।। S S SS S ।। S S

भाषार्थः—हे मृगनयने, बाले ! यदि जहाँ चतुर्थं और पञ्चम अक्षर लघु हो,
तो उसे पण्डितगण मदलेखा छन्द कहते हैं । (इस छन्द के प्रत्येक चरण में सात
अक्षर होते हैं—क्रमशः नगण, सगण और गुरु) ॥ ९ ॥

अनुष्टुबादि छन्दः (अष्टाक्षरजातिः)

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।

द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥ १० ॥

अन्वयः—श्लोके अन्ययोः, सप्तमं दीर्घं, द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं । सर्वत्र
पञ्चमं लघु, षष्ठं (च) गुरु ज्ञेयम् ।

व्याख्या—श्लोके अन्ययोः = प्रथमतृतीय चरणयोः, सप्तममक्षरं, गुरु =
दीर्घम्, द्विचतुष्पादयोः = द्वितीयचतुर्थचरणयोश्च, ह्रस्वं = लघु भवति । तथा
सर्वत्र = चतुर्विंशति पादेषु पञ्चममक्षरं लघु षष्ठं च गुरुः = द्विमात्रिकं भवति । तत्र
अनुष्टुबादयो भवन्ति ।

भाषार्थः—जिसके प्रथम और तृतीय चरण में सप्तम वर्ण गुरु हो, और
द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम वर्ण लघु हो तथा चारो चरणों में छठा अक्षर
गुरु तथा पाँचवाँ लघु हो, उसे अनुष्टुप् आदि जानना चाहिए ॥ १० ॥

पद्यछन्दः

प्रञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।

षष्ठं गुरु विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम् ॥ ११ ॥

१ कुछ लोग इसे अष्टाक्षरजाति का लक्षण न मानकर केवल अनुष्टुप् का ही लक्षण मानते हैं परन्तु अष्टाक्षरजाति के सभी छन्दों को अनुष्टुप् कहा जाता है । कुछ विद्वान् अनुष्टुप् के श्लोक और पद्य दो भेद करते हैं और इसे श्लोक का लक्षण मानते हैं ।

अन्वयः—सर्वत्र पञ्चमं लघु, द्विचतुर्थयोः सप्तमं (लघु) (सर्वत्र) षष्ठं गुरु, एतद् पद्यस्य लक्षणं विजानीयात् ।

व्याख्या—सर्वत्र = श्लोके चतुर्ष्वपि चरणेषु पञ्चमं लघु भवति, द्वि-चतुर्थयोः = द्वितीयचतुर्थपादयोः सप्तममक्षरं लघु = ह्रस्वं भवति तथा षष्ठं च गुरु सर्वत्र भवति, तत् पद्यछन्दसो लक्षणं विजानीयात् । यथा—

पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।

S I S I I S S I S I S I I S I S

षष्ठं गुरु विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम् ॥

S S I I I S S S S S S I I I S

अत्र गणनियमो न वर्तते, सर्वत्र चरणेषु अष्टाक्षराणि भवन्ति ।

भाषार्थः—जिसके चारों चरणों में पञ्चम वर्ण लघु होता है, द्वितीय और चतुर्थ चरण का सप्तम अक्षर भी लघु होता है और सर्वत्र षष्ठ वर्ण गुरु होता है, उसे पद्य का लक्षण जानना चाहिये (यहाँ कोई गणनियम नहीं है) ॥ ११ ॥

माणवकं छन्दः (अष्टाक्षरा वृत्तिः)

आदिगतं तुर्यगतं पञ्चमकं चान्त्यगतम् ।

स्याद् गुरु चेत्तत्कथितं माणवकाक्रीडमिदम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—आदिगतं तुर्यगतं पञ्चमकम् अन्त्यगतं च गुरु स्यात्, चेत्, इदं माणवकाक्रीडं कथितम् ।

व्याख्या—चेत् = यदि वृत्ती आदिगतं = प्रथमं, तुर्यगतं = चतुर्थं, पञ्चमकं = पञ्चमं, अन्त्यगतं = अन्त्यमक्षरं, गुरु = दीर्घम्, स्यात् = भवेत्तद् इदं माणवकाक्रीडं कथयन्ति । यथाऽस्मिन्नेव श्लोके—

आदिगतं तुर्यगतं । पञ्चमकं चान्त्यगतम् । इत्यादि ।

S I I S S I I S S I I S S I I I S

तथा चोक्तं वृत्तरत्नाकरे—माणवकं भस्तलगः ।

S I I S S I I S

भाषार्थः—जहाँ पर प्रथम, चतुर्थ, पञ्चम तथा अन्त्य (अष्टम) वर्ण गुरु हो, उसे माणवकाक्रीड छन्द कहते हैं (इसके अन्तर्गत प्रत्येक चरण में ८ अक्षर होते हैं जो क्रमशः भगण, तगण, एक लघु और गुरु होता है) ॥ १२ ॥

नगस्वरूपिणी (अष्टाक्षरा वृत्तिः)

द्वितुर्यषष्ठमष्टमं गुरु प्रयोजितं यदा ।

तदा निवेदयन्ति तां बुधा नगस्वरूपिणीम् ॥ १३ ॥

अन्वयः—यदा द्वितुर्यषष्ठमष्टमं गुरु प्रयोजितं (भवति) तदा बुधाः तां नगस्वरूपिणीं निवेदयन्ति ।

व्याख्या—यदा यस्यां वृत्ती द्वितीयं, चतुर्थं, षष्ठं, अष्टमं च गुरु = द्विमात्रिकं, प्रयोजितं = प्रयुक्तं भवति, तदा तां नगस्वरूपिणीं, बुधाः = षण्डिताः, निवेदयन्ति = कथयन्ति । यथाऽस्मिन्नेव श्लोके—

द्वितुर्यषष्ठमष्टमं । गुरु प्रयोजितं यदा । इत्यादि ।

I S I S I S I S I S I S I S

भाषार्थः—जहाँ प्रत्येक पाद में दूसरा, चौथा, छठा और आठवाँ अक्षर गुरु प्रयुक्त होता है, तब उसे विद्वान् लोग नगस्वरूपिणी छन्द कहते हैं (इसमें प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं जिसका क्रम है—जगण, रगण, लघु और गुरु) ॥ १३ ॥

विद्युन्माला (अष्टाक्षरा वृत्तिः)

सर्वे वर्णा दीर्घा यस्यां विश्रामः स्याद्वेदैर्वेदैः ।

विद्वद्बुन्दैर्वीणावाणि ! व्याख्याता सा विद्युन्माला ॥ १४ ॥

अन्वयः—हे वीणावाणि ! यस्यां सर्वे वर्णाः, दीर्घाः, वेदैः वेदैः विश्रामः स्यात् सा विद्वद्बुन्दैः विद्युन्माला व्याख्याता ।

व्याख्या—वीणायाः वाणीव वाणी यस्याः सा वीणावाणी तस्याः सम्बुद्धी । सर्वे वर्णा दीर्घाः = गुरवो भवन्ति, वेदैर्वेदैः = चतुर्भिश्चतुर्भिः विश्रामः = विरामो, भवतीति सा विदुषां समूहैः विद्युन्माला इति व्याख्याता = कथिता । यथा—

सर्वे वर्णा, दीर्घा यस्यां, विश्रामः स्याद्वेदैर्वेदैः । इत्यादि ।

S S S S S S S S S S S S S S S S

वृत्तरत्नाकरे यथा—मो मो गो गो विद्युन्माला ।

S S S S S S S S

१. वृत्तरत्नाकर में इसे प्रमाणिकाछन्द कहा गया है । लक्षण इस प्रकार है—

प्रमाणिका जरो लगौ ।

I S I S I S I S

भाषार्थः—हे मधुरभाषिणि ! जिसमें सभी वर्ण दीर्घ (गुरु) हों, और प्रत्येक चतुर्थ अक्षर पर विराम हो, उस छन्द को पण्डितों ने 'विद्युन्माला' कहा है । (इस छन्द में क्रमशः मगण, मगण और दो गुरु होते हैं तथा चतुर्थाक्षर पर यति होती है) ॥ १४ ॥

चम्पकमाला (दशाक्षरा वृत्तिः)

तन्वि गुरु स्यादाद्यचतुर्थं पञ्चमषष्ठं चान्त्यमुपान्त्यम् ।

इन्द्रियबाणैर्यत्र विरामः सा कथनीया चम्पकमाला ॥ १५ ॥

अन्वयः—हे तन्वि ! यत्र आद्यचतुर्थं पञ्चमषष्ठं चान्त्यम्, उपान्त्यम् गुरु, इन्द्रियबाणैः विरामः स्यात्, सा चम्पकमाला कथनीया ।

व्याख्या—तनु यस्यास्तीति तन्वी तस्याः सम्बुद्धी हे तन्वि ! यत्र = यस्यां वृत्ती, आद्यचतुर्थं = प्रथमं चतुर्थं च, पञ्चमं, षष्ठं, अन्त्यम् = दशममक्षरं, उपान्त्यम् = नवमं च गुरु दीर्घम् भवति, तथा यत्र च इन्द्रियबाणैः = पञ्चभि-
रक्षरैः, विरामः = विश्रामः । सा चम्पक माला, कथनीया = ज्ञातव्या । यथा—

तन्वि गुरु स्यादाद्यचतुर्थं, पञ्चमषष्ठं चान्त्यमुपान्त्यम् । इत्यादि ।

S I I S S S I I S S S I I S S S I I S S

वृत्तरत्नाकरे च—चम्पकमाला चेद्भमसागः ।

S I I S S S I I S S

भाषार्थः—हे तन्वज्जि ! जिसमें प्रथम, चतुर्थ, पंचम, और षष्ठ, दशम और उपान्त्य (नवम) अक्षर गुरु हो और जिसमें पाँच-पाँच अक्षरों पर विराम हो, उसे चम्पकमाला कहना चाहिए (इसकी चरणाक्षर संख्या १० है जिसमें क्रमशः—भगण, मगण, सगण और एक गुरु होता है । तथा ५ पर यति होती है) ॥ १५ ॥

मणिवन्धछन्दः (नवाक्षरावृत्ति)

चम्पकमाला यत्र भवेदन्त्यविहिना प्रेमनिधे ।

छन्दसि दक्षा ये कवयस्तन्मणिवन्धं ते ब्रुवते ॥ १६ ॥

अन्वयः—हे प्रेमनिधे ! यत्र अन्त्यविहीना चम्पकमाला भवेत्, छन्दसि दक्षा ये कवयः ते तं मणिवन्धं ब्रुवते ।

व्याख्या—हे प्रेमनिधे, प्रेम्णः निधिरिव निधि तस्याः सम्बुद्धी । यत्र = यस्मिन् श्लोके, अन्त्यविहीना = अन्त्याक्षररहिता, चम्पकमाला = तल्लक्षणयुता, भवेत् = स्यात्, छन्दसि = छन्दोग्रन्थे ये दक्षाः = निपुणाः कवयस्ते तं मणिवन्ध-
संज्ञकं ब्रुवते = कथयन्ति । यथाऽस्मिन्नेव श्लोके—

चम्पकमाला यत्र भवेदन्त्यविहीना प्रेमनिधे ! इत्यादि ।

S I I S S S I I S S I I S S S I I S

भाषार्थः—हे प्रेमनिधे ! जहाँ पर अन्त्यवर्ण रहित चम्पकमाला का लक्षण घटित होता हो, उसे छन्दशास्त्र में निपुण कविगण मणिबन्ध नाम देते हैं । (इस छन्द के प्रत्येक चरण में ९ अक्षर होते हैं जो क्रमशः भगण, मगण और सगण हैं । यति ५ और फिर ४ पर होती है) ॥ १६ ॥

शालिनीछन्दः (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

ह्रस्वो वर्णो जायते यत्र षष्ठः

कम्बुग्रीवे ! तद्वदेवाष्टमान्त्यः ।

विश्रामः स्यात्तन्वि ! वेदैस्तुरङ्गै

स्तां भाषन्ते शालिनीं छान्दसीयाः ॥ १७ ॥

अन्वयः—कम्बुग्रीवे ! तन्वि ! यत्र षष्ठः वर्णः ह्रस्वः जायते । तद्वत् अष्टमान्त्यः । वेदैः तुरङ्गैः विश्रामः स्यात्, तां छान्दसीयाः शालिनीं भाषन्ते ।

व्याख्या—एकादशाक्षरजाती शालिनीछन्दसो लक्षणमाह । हे तन्वि, हे कम्बुग्रीवे ! “कम्बुग्रीवा त्रिरेखा स्यात्” (अम०) कम्बोः शङ्खस्य ग्रीवावद्ग्रीवा यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । तन्वि = कृशाङ्गि, अष्टमान्त्यः = नवमः । ह्रस्वः = एकमात्रिकः । विश्रामः = यतिः । वेदैः = चतुर्भिः । तुरङ्गैः = सप्तभिः । छान्दसीयाः = छन्दोशास्त्रज्ञाः शालिनीसंज्ञकं भाषन्ते = कथयन्ति यथा—

ह्रस्वो वर्णो जायते यत्र षष्ठः । इत्यादि ।

S S S S S I S S I S S

तथा च वृत्तरत्नाकरे—शालिन्युक्ता म्ती तगौ गोब्धि लोकैः

S S S S S I S S I S S

अन्यत्राऽपि—मत्तौ गो चेच्छालिनी वेदलोकैः ।

S S S S S I S S I S S

भाषार्थः—हे तन्वङ्गि, सुन्दरि ! जिसमें प्रत्येक पाद में षष्ठ वर्ण लघु होता है तथा वैसे ही अष्टमान्त्य अर्थात् नवम भी (ह्रस्व) होता है तथा चार (वेद) और सात (तुरङ्ग) अक्षरों पर विराम होता है, उसे छन्दशास्त्रवेत्ता शालिनी छन्द कहते हैं (इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं, क्रमशः मगण, तगण, तगण और दो गुरु वर्ण होते हैं तथा विराम ४ और ७ पर होता है) ॥ १७ ॥

हंसीछन्दः (दशाक्षरा वृत्तिः)

मन्दाक्रान्तान्त्ययतिरहिता सालङ्कारे ! भवति यदि सा ।

तद्विद्वद्भिर्ध्रुवमभिहिता ज्ञेया हंसी कमलवदने ॥ १८ ॥

अन्वयः—सालङ्कारे, कमलवदने । यदि अन्त्ययतिरहिता मन्दाक्रान्ता भवति तद् विद्वद्भिः अभिहिता सा ध्रुवं हंसी ज्ञेया ।

व्याख्या—अलङ्कारेण सहिता सालङ्कारा तस्याः सम्बुद्धी—सालङ्कारे ! कमल-मिव वदनं यस्याः सा तत्सम्बुद्धी हे कमलवदने ! यदि मन्दाक्रान्ताछन्दः, अन्त्य-यतिरहिता = सप्तमविरामरहिता भवति तदा छन्दोनिपुणैः, ध्रुवं = निश्चयम् । अभिहिता = कथिता । सा हंसी=दशाक्षरजाती हंसीछन्दः ज्ञेय इति भावः । यथा—

मन्दाक्रान्तान्त्ययतिरहिता । सालङ्कारे भवति यदि सा ।

S S S S I I I I S S S S I I I I S

भाषार्थः—हे आभूषणसंयुते, कमलवदने ! यदि मन्दाक्रान्ता छन्दः ही अन्त्यविराम (सप्तम) से रहित होता है तो छन्दशास्त्रज्ञों द्वारा कहा गया वह (दशाक्षर) छन्द अवश्य ही हंसी जानना चाहिए ।

(इस छन्द के प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं जो क्रमशः मगण, भगण, नगण और गुरु हैं । इसमें यति ४, ६ पर होता है) ॥ १८ ॥

दोधकवृत्तम् (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

आद्यचतुर्थमहीननितम्बे ! सप्तमकं दशमं च तथान्त्यम् ।

यत्र गुरु प्रकटस्मरसारे ! तत्कथितं ननु दोधकवृत्तम् ॥ १९ ॥

अन्वयः—अहीननितम्बे ! प्रकटस्मरसारे आद्यचतुर्थम्, सप्तमकं, दशमं तथा च अन्त्यं यत्र गुरु, तत् ननु दोधकवृत्तं कथितम् ।

व्याख्या—अहीनी स्थूली नितम्बी यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । प्रकटः स्मर-सारः = कामबलं यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । यत्र = यस्मिन् वृत्ते, आद्यचतुर्थम् = प्रथमं चतुर्थं च । सप्तमकं = सप्तमं, दशमं तथा अन्त्यम् = अन्तिमेकादशाक्षरं गुरु = द्विमात्रिकं भवति । कविभिः ननु तत् दोधकवृत्तम् कथितम् । यथा—

आद्यचतुर्थमहीननितम्बे । सप्तमकं दशमं च तथान्त्यम् । इत्यादि ।

S I I S I I S I I S S S I I S I I S I I S S

तथा च वृत्तरत्नाकरे—दोधकवृत्तमिदं भभभाद्गी ।

S I I S I I S I I S S

१. मन्दाक्रान्ताछन्द के लक्षण के लिए श्लोक ४१ देखें ।

छन्दोमञ्जरीच—दोधकमिच्छति भत्रितयाद्गौ ।

S I I S I I S I I S S

भाषार्थः—हे स्थूलनितम्बे, हे स्फुटकामवति ! जिसमें प्रथम, चतुर्थ, दशम तथा अन्त्य (ग्यारहवाँ) अक्षर गुरु होता है, उसे निश्चय ही दोधकवृत्त कहते हैं । (इस छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर क्रमशः—भगण, भगण, भगण और दो गुरु होते हैं) ॥ १९ ॥ ✓

इन्द्रवज्राछन्दः (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

यस्यां त्रिषट्सप्तममक्षरं स्याद् ह्रस्वं सुजङ्घे ! नवमं च तद्वत् ।

गत्या विलज्जीकृतहंसकान्ते ! तामिन्द्रवज्रां ब्रुवते कवीन्द्राः ॥ २० ॥

अन्वयः—हे सुजङ्घे गत्या विलज्जीकृतहंसकान्ते ! यस्यां त्रि-षट्-सप्तमम् अक्षरं, नवमं च तद्वत् ह्रस्वं स्यात्, तां कवीन्द्राः इन्द्रवज्रां, ब्रुवते ।

व्याख्य—गत्या विलज्जीकृता हंसस्य कान्तिः = शोभा यया सा तत्सम्बुद्धी । सप्तमं तद्वत् नवमं चाक्षरं ह्रस्वं स्यात् = भवेत् । तां = वृत्तम् कवीन्द्राः = छन्दो-निपुणाः, इन्द्रावज्रा, इति कथयन्ति । तदुदाहरणं यथा—

✓ यस्यां त्रिषट्सप्तममक्षरं स्याद् ह्रस्वं सुजङ्घे नवमं च तद्वत् ।

S S I S S I I S I S S S S I S S I I S I S S

तथा च वृत्तरत्नाकरे छन्दोमञ्जरीच—

स्यादिन्द्रवज्रा यदि ती जगौ गः ।

S S I S S I I S I S S

भाषार्थः—हे मत्तगामिनि ! सुन्दरजघनवाली ! जिसमें तृतीय, षष्ठ, सप्तम और नवम अक्षर लघु होते हैं, उस वृत्त को कविगण इन्द्रवज्रा कहते हैं । (इस वृत्त के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर क्रमशः—तगण, तगण, जगण और दो गुरु होते हैं और यति ५ तथा ६ अक्षरों पर होती है) ॥ २० ॥

उपेन्द्रवज्रा (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

यदीन्द्रवज्राचरणेषु पूर्वं भवन्ति वर्णा लघवः सुवर्णे ।

अमन्दमाद्यन्मदने तदानीमुपेन्द्रवज्रा कथिता कवीन्द्रैः ॥ २१ ॥

अन्वयः—सुवर्णे ! अमन्दमाद्यन्मदने ! यदि इन्द्रवज्राचरणेषु पूर्वं लघवः वर्णाः भवन्ति, तदानीं कवीन्द्रैः उपेन्द्रवज्रा कथिता ।

१. अस्योदाहरणं यथा नीतिशतके—

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परपीडनाय ।

खलस्य साधोर्विपरीतमेतत्, शानाय दानाय च रक्षणाय ॥

व्याख्या—अमन्दं = अधिकं, माद्यन् = हर्षं कुर्वन् मदनो यस्यां सा तत्सम्बुद्धी । हे सुवर्ण ! यदि इन्द्रवज्रावृत्तौ चतुर्षु चरणेषु पूर्वं वर्णाः लघवो भवन्ति, तदानीं सा कवीन्द्रैः = कविश्रेष्ठैः, उपेन्द्रवज्रा कथिता । शेषमिन्द्रवज्रा-वत् भवति । यथा—

यदीन्द्रवज्राचरणेषु पूर्वं । भवन्ति वर्णा लघवः सुवर्ण । इत्यादि ।

IS ISS IIS SS IS ISS IIS ISS

तथा वृत्तरत्नाकरे—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गी ।

IS ISS IIS IS S

तथा चोक्तं छन्दोमञ्जर्याम्—उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघो सा ।

IS ISS IIS IS S

भाषार्थः—हे गौराङ्गि, हे अत्यधिक काम के हर्षवाली ! यदि इन्द्रवज्रा के चारो चरणों में प्रथम अक्षर लघु हो, तो कवीश्वरों द्वारा वही उपेन्द्रवज्रा कहा गया है । (इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर क्रमशः जगण, तगण, जगण और दो गुरु होते हैं तथा ५ और ६ अक्षरों पर यति होती है) ॥ २१ ॥

उपजातिः (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

यत्र द्वयोरप्यनयोस्तु पादा भवन्ति सीमन्तिनि ! चन्द्रकान्ते ! ।

विद्वद्भिराद्यैः परिकीर्तिता सा प्रयुज्यतामित्युपजातिरेषा ॥२२॥

अन्वयः—हे सीमन्तिनि ! चन्द्रकान्ते ! यत्र द्वयोः अनयोः, पादाः, भवन्ति, सा, आद्यैः विद्वद्भिः, परिकीर्तिता एषा उपजाति, इति प्रयुज्यताम् ।

व्याख्या—सीमन्तिनि, चन्द्रकान्ते-द्वे सम्बोधने । यत्र = यस्मिन् वृत्ते । द्वयोरनयोः = इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः, पादाः यथाक्रमेण भवन्ति । प्रथमे तृतीये इन्द्रवज्रावृत्तां, द्वितीये चतुर्थे चोपेन्द्रवज्रावृत्तमिति भावः । आद्यैः = पुरातनैः विद्वद्भिः परिकीर्तिता सा उपजातिवृत्तमिति प्रयुज्यताम् । यथाऽस्मिन्नेव श्लोके—

यत्र द्वयोरप्यनयोस्तु पादा । (इन्द्रवज्रा)
SS ISS IIS S SS

भवन्ति सीमन्तिनि चन्द्रकान्ते । (उपेन्द्रवज्रा)
IS I SS I I S IS S

विद्वद्भिराद्यैः परिकीर्तिता सा । (इन्द्रवज्रा)
SS ISS IIS IS S

प्रयुज्यतामित्युपजातिरेषा । (उपेन्द्रवज्रा) = उपजातिः
IS IS S IIS ISS

अन्यच्च—

कपूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा वसन्तं हृदयारवृन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि ॥^१

भाषार्थः—हे सुकेशि, हे चन्द्रकान्ते ! जिसमें इन दोनों अर्थात् इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्द के लक्षणवाले पाद हों अर्थात् जिसका प्रथम और तृतीय चरण इन्द्रवज्रा का हो तथा द्वितीय और चतुर्थ उपेन्द्रवज्रा का हो, उसे पुरातन विद्वानों ने उपजाति छन्द कहा है ॥ २२ ॥

आख्यानकी (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

आख्यानकी स्यात्प्रकटीकृतार्थे ! ।

यदीन्द्रवज्राचरणः पुरस्तात् ॥

उपेन्द्रवज्राचरणाख्योऽन्ये

मनीषिणोक्ता

विपरीतपूर्वा ॥ २३ ॥

अन्वयः—हे प्रकटीकृतार्थे ! यदि पुरस्तात् इन्द्रवज्राचरणः, अन्ये त्रयः उपेन्द्रवज्राचरणाः स्यात्, मनीषिणा, विपरीतपूर्वा आख्यानकी उक्ता ।

व्याख्या—प्रकटीकृतोऽर्थः कामलक्षणो यया सा तत्सम्बुद्धो । यदि पुरस्तात् = पूर्व प्रथमचरणः, इन्द्रवज्राचरणः = इन्द्रवज्राचरणवत्स्यात्, अन्ये त्रयश्चरणाः = उपेन्द्रवज्राचरणवत्सन्ति, तदा मनीषिणा विपरीतपूर्वाख्यानकी = विपरीताख्यानकी, उक्ता = कथिता । तदुदाहरणं तु उपर्येव श्लोके द्रष्टव्यम् ।

भाषार्थः—हे कामिनि ! यदि छन्द में प्रथम चरण इन्द्रवज्रा का हो और अन्य तीन चरण उपेन्द्रवज्रा के ही हों, उसे विद्वानों ने विपरीतपूर्वा^२ आख्यानकी अथवा विपरीताख्यानकी कहा है ॥ २३ ॥

रथोद्धता (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

आद्यमक्षरमतस्तृतीयकं

सप्तमं च नवमं तथान्तिमम् ।

दीर्घमिन्दुमुखि ! यत्र जायते

तां वदन्ति कवयो रथोद्धताम् ॥ २४ ॥

१ अन्योदाहरणानि तु रघुवंशमहाकाव्ये द्वितीये सर्गे द्रष्टव्यानि ।

२ आख्यानकी नाम से कोई छन्द वृत्तरत्नाकर अथवा छन्दो० में उपलब्ध नहीं है परन्तु पिङ्गलाचार्यादि द्वारा इलायुध आदि में यह मिलता है । केदारभट्ट ने भी वृत्तरत्नाकर में विपरीतपूर्वा का लक्षण दिया है ।

अन्वयः—हे इन्दुमुखि ! यत्र आद्यं अक्षरं, अतस्तृतीयकं, सप्तमं, नवमं तथा अन्तिमं च दीर्घं जायते, तां कवयः रथोद्धताम् वदन्ति ।

व्याख्या—इन्दुरिव मुखं यस्याः सा तत्सम्बुद्धी हे इन्दुमुखि ! आद्यं = प्रथमं, तृतीयं, सप्तमं, नवमं, अन्तिमं = एकादशो वर्णः, दीर्घं = द्विमात्रिकं जायते, तदा कवयस्तां रथोद्धतेति वृत्तं वदन्ति । तदुदाहरणमपि श्लोके द्रष्टव्यम्—

आद्यमक्षरमतस्तृतीयकं । सप्तमं च नवमं तथा अन्तिमम् । इत्यादि ।

S I S I I I S I S I S I S I I I S I S I S

भाषार्थः—हे इन्दुमुखि ! जिस छन्द में प्रथम, तृतीय, सप्तम, नवम और अन्तिम—ग्यारहवाँ अक्षर दीर्घ (गुरु) हो, तो विद्वान् लोग उसे रथोद्धता छन्द कहते हैं (इस छन्द में प्रत्येक चरण में कुल ११ अक्षर क्रमशः रगण, नगण, रगण, लघु और गुरु होते हैं और ७ तथा ४ अक्षरों पर यति होती है) ॥ २४ ॥

स्वागता (एकादशाक्षरा वृत्तिः)

अक्षरं च नवमं दशमं चेद्व्यत्ययाद्भवति यत्र विनीते !

प्रोक्तमेणनयने ! यदि सैव स्वागतेति कविभिः कथितासौ ॥ २५ ॥

अन्वयः—हे विनीते ! एणनयने ! असी यदि तत्र नवमं दशमं च अक्षर व्यत्ययाद् भवति, कविभिः सैव स्वागता इति कथिता ।

व्याख्या—एणस्य नयने इव नयने यस्याः सा तत्सम्बुद्धी, हे मृगनयने ! सैव = रथोद्धताछन्दः । यत्र नवमं दशमं चाक्षरं व्यत्ययात् = वैपरीत्येन भवति अर्थात् नवमो वर्णः दशमवत् दशमो नवमवत् ह्रस्वदीर्घक्रमेण भवति । रथोद्धतायां नवमो गुरु वर्णः, स्वागतायां लघु भवति, दशमो वर्णः रथोद्धतायां लघु, स्वागतायां च गुरु भवतीत्यर्थः । यथाऽस्मिन्नेव श्लोके—

अक्षरं च नवमं दशमं चेद्व्यत्ययाद्भवति यत्र विनीते ।

S I S I I I S I I S S ' S I S I I I S I I S S

यथा वृत्तरत्नाकरे—स्वागतेति रनभाद् गुरुयुग्मम् ।

S I S I I I S I I S S

छन्दोमञ्जर्याच—स्वागता रनभगैरुगुणा च ।

भाषार्थः—हे विनयति, मृगनयने ! उस रथोद्धता छन्द में ही जब नवम और दशम अक्षर विपरीतभाव को प्राप्त होते हैं (अर्थात् रथोद्धता में जो नवम गुरु वर्ण है वह लघु होता है और दशम लघु वर्ण हो जाता है) उसे विद्वानों ने स्वागता छन्द कहा है । (इसमें प्रतिचरण में ११ अक्षर, रगण, नगण, भगण और दो गुरु होते हैं तथा ७ और ४ पर यति होता है) ॥ २५ ॥

वैश्वदेवी (द्वादशाक्षरा वृत्तिः)

ह्रस्वो वर्णः स्यात्सप्तमो यत्र बाले !

तद्वद्विम्बोष्ठि ! न्यस्त एकादशाद्यः ।

बाणैर्विश्रामस्तत्र चेद्वास्तुरङ्गै

नाम्ना निर्दिष्टा सुभ्रु ! सा वैश्वदेवी ॥ २६ ॥

अन्वयः—हे बाले ! हे विम्बोष्ठि ! हे सुभ्रु ! यत्र सप्तमः वर्णः ह्रस्वः स्यात् । तद्वत् एकादशाद्यः । तत्र चेत् बाणै वा तुरङ्गैः विश्रामः, सा नाम्ना वैश्वदेवी निर्दिष्टा ।

व्याख्या—विम्बवदोष्ठौ यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ । सुष्ठु भ्रुवौ यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ । यत्र सप्तमो ह्रस्वः = लघु, वर्णः, एकादशाद्यः = दशमोवर्णः, तद्वत् लघुरेव बाणैः = पञ्चभिः, तुरङ्गैः = सप्तभिः विश्रामः = यतिः स्यात्सा नाम्ना वैश्वदेवी निर्दिष्टा = कथिता । यथा—

ह्रस्वो वर्णः स्यात्सप्तमो यत्र बाले । इत्यादि ।

S S S S S S I S S I S S

तथा च वृत्तरत्नाकरे—पञ्चाक्षरैश्छिन्ना वैश्वदेवी मी यो ।

भाषार्थः—हे सुभ्रु ! जिसमें सप्तम और दशम अक्षर ह्रस्व (लघु) हो तथा पाँचवें और सातवें अक्षर पर यति हो, उसे विद्वानों ने वैश्वदेवी नाम से निर्दिष्ट किया है (इसमें प्रत्येक चरण में १२ अक्षर क्रमशः—मगण, मगण, यगण और यगण होते हैं तथा ५ और ७ पर यति होता है) ॥ २६ ॥

तोटकवृत्तम् (द्वादशाक्षरा वृत्तिः)

सतृतीयकषष्ठमनन्तरते ! नवमं विरतिप्रभवं गुरु चेत् ।

घनपीनपयोधरभारनते ! ननु तोटकवृत्तमिदं कथितम् ॥ २७ ॥

अन्वयः—अनन्तरते ! घनपीनपयोधरभारनते ! सतृतीयकषष्ठं, नवमं, विरतिप्रभवं गुरु चेत्, ननु इदं तोटकवृत्तम् कथितम् ।

व्याख्या—घनी च पीनी च घनपीनी, तौ पयोधरी च तयोर्भारः तेन नता या सा तत्सम्बुद्धौ । तृतीयेन सह सतृतीयकं, षष्ठं, नवमं, अन्त्यं = द्वादशं, गुरु = दीर्घः, स्यात् । ननु = निश्चयेन । इदं = वृत्तं तोटकवृत्तमिति कथितम् । यथा—

सतृतीयकषष्ठमनन्तरते । इत्यादि

I I S I I S I I S I I S

वृत्तरत्नाकरे च—इह तोटकमम्बुधिसैः कथितम् ।

॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

अन्यत्राऽपि—यद तोटकमब्धिसकारयुतम् ।

॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

भाषार्थः—हे अनन्तरते ! तथा सघन उरोजों के भार से नम्र प्रिये ! जिसमें तृतीय, पष्ठ और नवम तथा अन्य (बारहवाँ) वर्ण गुरु हो, उसे निश्चय ही तोटक वृत्त कहा गया है । (इस छन्द में प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते हैं जो क्रमशः चार सगण होते हैं और यति ६, ६ पर होती है) ॥ २७ ॥

भुजङ्गप्रयातम् (द्वादशाक्षरा वृत्तिः)

यदाद्यं चतुर्थं तथा सप्तमं चेत् तथैवाक्षरं ह्रस्वमेकादशाद्यम् ।

शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दे ! तदुक्तं कवीन्द्रैर्भुजङ्गप्रयातम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दे ! यदा आद्यं, चतुर्थं, सप्तमं, तथैव एकादशाद्यम् अक्षरं ह्रस्वं चेत् । तत् कवीन्द्रैः भुजङ्गप्रयातम् उक्तम् ॥ २८ ॥

व्याख्या—शरदः चन्द्रः शरच्चन्द्रः तस्य विद्वेषि वक्त्रमेवारविन्दं यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । आद्यं = प्रथमं, चतुर्थं, सप्तमं, एकादशाद्यम् = दशमं चाक्षरं ह्रस्वं भवति, तदा कवीवरैः भुजङ्गप्रयातम् उक्तम् = कथितम् । यथाऽस्मिन्नेव श्लोके—

यदाद्यं चतुर्थं तथा सप्तमं चेत् । इत्यादि ।

॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

तथा चोक्तं छन्दोमन्त्रयाम्—

भुजङ्ग प्रयातं चतुर्भिर्यकारैः

॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

वृत्तरत्नाकरे च—भुजङ्गप्रयातं भवेद् यैश्चतुर्भिः ।

भाषार्थः—हे कमलवदने ! जहाँ पर प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम—ह्रस्व (लघु) हों उसको कवीश्वरों ने भुजङ्ग प्रयात छन्द कहा है (इसके प्रत्येक चरण में १२ अक्षर, जो क्रमशः चार यगण होते हैं और यति ६, ६, पर होती है) ॥ २८ ॥

द्रुतविलम्बितम् (द्वादशाक्षरावृत्तिः)

अयि कृशोदरि ! यत्र चतुर्थकं गुरु च सप्तमकं दशमं तथा ।

विरतिगं च तथैव त्रिजगैर्द्रुतविलम्बितम् ॥ २९ ॥

अन्वयः—अयि कृशोदरि ! यत्र चतुर्थकं, सप्तमकं तथा दशमं गुरु विरतिगं च तथैव, विचक्षणैः, द्रुतविलम्बितम् इति उपदिश्यते ॥ २९ ॥

व्याख्या—कृशमुदरं यस्या सा तत्सम्बुद्धी = हे तन्वद्भि ! यत्र चतुर्थं, सप्तमं, दशमं विरतिगं = अन्त्यं द्वादशं, गुरु स्यात्, तदा विचक्षणैः = विद्वद्भिः, तं द्रुतविलम्बतमिति उपदिश्यते । यथा—^१

अयि कृशोदरि यत्र चतुर्थकम् । इत्यादि ।

11 151 151 151 5

तथा चोक्तं वृत्तरत्नाकरे छन्दोमञ्जर्या च—

द्रुतविलम्बितमाह नभी भरी ।

11 15 1 15 1 15 15

भाषार्थः—अयि कृशोदरि ! जहाँ पर चतुर्थ, सप्तम, दशम तथा वैसे ही अन्त्य (बारहवाँ) अक्षर गुरु होता है, उस छन्द को विद्वान् लोग द्रुतविलम्बित कहते हैं । (उसके प्रत्येक चरण में १२ अक्षर क्रमशः, नगण, भगण, भगण और रगण होते हैं) ॥ २९ ॥

प्रमिताक्षरा (द्वादशाक्षरावृत्तिः)

यदि तोटकस्य गुरु पञ्चमकं विहितं विलासिनि ! तदक्षरकम् ।
रससंख्यकं गुरु न चेदबले ! प्रमिताक्षरेति कविभिः कथिता ॥ ३० ॥

अन्वयः—विलासिनि ! अवले ! यदि तोटकस्य पञ्चमकं अक्षरकं गुरु
विहितं रससंख्यकं गुरु न चेत्, कविभिः प्रमिताक्षरा कथिता ॥ ३० ॥

व्याख्या—यदि तोटकछन्दसो लक्षणे पञ्चमकं = पञ्चमं गुरु, विहितं = स्यात् रससंख्यकं = षष्ठं अक्षरं, गुरु न चेत् = लघु भवतीत्यर्थः । तदा सा कविभिः प्रमिताक्षरा कथिता = उक्ता । यथा—

यदि तोटकस्य गुरु पञ्चमकम् । इत्यादि ।

115151 115115

वृत्तरत्नाकरे च—प्रमिताक्षरा सजससैरुदिता ।

11515 1115115

१. यथा च नीतिशतके—

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।

CC-0. In the Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In the Public Domain. Digitized by eGangotri

भाषार्थः—हे विलासिनि, अबले ! यदि तोटक छन्द का पाँचवा अक्षर गुरु हो और छठा अक्षर लघु हो, तो कविगण उसे प्रमिताक्षरा कहते हैं । (इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर क्रमशः सगण, जगण, सगण, सगण होते हैं) ॥३०॥

हरिणीप्लुता

प्रथमाक्षरमाद्यतृतीययोर्द्रुतविलम्बितकस्य च पादयोः ।
यदि चेन्न तदा कमलेक्षणे ! भवति सुन्दरि ! सा हरिणीप्लुता ॥३१॥

अन्वयः—हे कमलेक्षणे ! सुन्दरि ! द्रुतविलम्बितकस्य आद्यतृतीययोः पादयोः प्रथमाक्षरं चेत् न भवति तदा सा हरिणीप्लुता (भवति) ॥ ३१ ॥

व्याख्या—कमलवदीक्षणे यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । हे सुन्दरि ! यदि द्रुतविलम्बितछन्दसः प्रथमतृतीयपादयोः, प्रथमाक्षरं न भवति चेत् तदा सा हरिणीप्लुता ज्ञेया । अयमर्थः द्वादशाक्षरा वृत्तिः द्रुतविलम्बितं, तत्र विषमपादयोः भवतः सा हरिणीप्लुतेति । यथा—

प्रथमाक्षर माद्य तृतीययोः (एकादशाक्षरं)

। । S । । S । । S । S

द्रुतविलम्बितकस्य च पादयोः (द्वादशाक्षरं) । एवमन्ययोरपि

। । । S । । S । । S । S

चरणयोः बोध्यम् ।

भाषार्थः—हे कमलनयने ! जिस छन्द में प्रथम और तृतीय चरण का प्रथम अक्षर (प्रथम—तृतीय पाद में) न हो, अर्थात् प्रथम और तृतीय चरण १२—१ = ११ अक्षर का हो और द्वितीय और चतुर्थ चरण द्रुतविलम्बित के समान १२ अक्षर का हो, उसे हरिणीप्लुता छन्द कहते हैं ॥ ३१ ॥

वंशस्थवृत्तम् (द्वादशाक्षरावृत्तिः)

उपेन्द्रवज्राचरणेषु सन्ति चेदुपान्त्यवर्णा लघवः कृता यदा ।
मदोल्लसद्भूजितकामकामुंके ! वदन्ति वंशस्थमिदं बुधास्तदा ॥३२॥

अन्वयः—मदोल्लसद्भूजितकामकामुंके ! यदा उपेन्द्रवज्राचरणेषु उपान्त्यवर्णाः लघवः, कृता सन्ति, तदा बुधाः इदं वंशस्थं वदन्ति ॥ ३२ ॥

व्याख्या—मदेन उल्लसन्ती भ्रुवौ ताभ्यां जितं कामकामुंकं मदनधनुयंया सा तत्सम्बुद्धी । यदा उपेन्द्रवज्रायाः चतुर्ष्वपि चरणेषु, उपान्त्यवर्णाः = अन्त्यस्य समीपमुपान्त्य, उपान्त्ये भवा उपान्त्या, अन्त्यसमीपस्था एकादशसंज्ञकाः वर्णाः

लघवः सन्ति अर्थात् प्रतिचरणे उपेन्द्र वज्रायाः एकादशाक्षरं लघुस्तत्र वंशस्थं वृत्तमिति । यथा—^१

उपेन्द्रवज्रा चरणेषु सन्ति चेत् । इत्यादि ।

। S । S S । । S । S । S

यथा वृत्तरत्नाकरे—जती तु वंशस्थमुदीरितं जरी ।

। S । S S । । S । S । S

भाषार्थः—अपनी मदमत्त भीहों से मदन के धनुष को जीतनेवाली हे सुन्दरि ! यदि उपेन्द्रवज्रा (द्वादशाक्षर वृत्ति) के प्रत्येक चरण में ग्यारहवाँ अक्षर लघु हो (अन्य उसके समान हो) तो पण्डित लोग उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं । (इसके प्रत्येक चरण में द्वादशाक्षर क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण होते हैं तथा ५, ७ पर यति होती है) ॥ ३२ ॥

इन्द्रवंशा (द्वादशाक्षरावृत्तिः)

यस्यामशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे ! वंशस्थपादा गुरुपूर्ववर्णका ।

तारुण्यहेलारतिरङ्गलालसे ! तामिन्द्रवंशां कवयः प्रचक्षते ॥ ३३ ॥

अन्वयः—अशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे ! तारुण्यहेलारतिरङ्गलालसे ! यस्यां वंश-
स्थपादा गुरुपूर्ववर्णकाः (भवन्ति) तां कवयः इन्द्रवंशां प्रचक्षते ॥ ३३ ॥

व्याख्य—अशोकाङ्कुरोरिव पाणि पल्लवी यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । तारुण्यस्य
हेलास्ताभी रतिरङ्गे लालसा यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । यस्यां = वृत्ती, वंशस्थचरणाः,
गुरुपूर्ववर्णकाः भवन्ति = वंशस्थस्थ चतुर्षु प्रथमाक्षरं गुरु भवति, तामिन्द्रवंशां
प्रचक्षते = कथयते । यथा—

यस्यामशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे । इत्यादि ।

S S । S S । । S । S । S

तथा चोक्तं वृत्तरत्नाकरे—स्यादिन्द्रवंशा ती ज्ञी ।

भाषार्थः—हे अशोकवृक्ष के पल्लवों के सदृश पाणिपल्लवयुता, विलासिनि प्रिये ! जिसमें वंशस्थवृत्त के पादों के प्रथम वर्णं गुरु हों, उसे कविगण इन्द्रवंशा छन्द कहते हैं । (इसमें प्रत्येक चरण में १२ अक्षर क्रमशः तगण, तगण, जगण और रगण होते हैं । यति ५, और ७ पर) ॥ ३३ ॥

१. यथा च पञ्चतन्त्रस्यापरीक्षितकारके—

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं, सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ।

जीवत्यनयोऽपि वने विसर्जितः, कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

प्रभावती (त्रयोदशाक्षरावृत्तिः)

यस्यां प्रिये ! प्रथमकमक्षरद्वयं तुयं तथा गुरु नवमं दशान्तिकम् ।
सान्त्यं भवेद्यतिविरतिर्युगग्रहैः सा लक्षिता ह्यमृतलते ! प्रभावती ॥३४॥

अन्वयः—हे प्रिये ! अमृतलते ! यस्यां प्रथमकं अक्षरद्वयं, तुयं, नवमं, तथा दशान्तिकं सान्त्यं गुरु भवेत्, युगग्रहैः यतिविरतिः सा प्रभावती लक्षिता ॥ ३४ ॥

व्याख्या—हे अमृतलते, प्रिये ! यस्यां वृत्ती प्रथममक्षरद्वयं, तुयं = चतुर्थं, नवमं, दशान्तिकं = एकादशं, सान्त्यं = अन्त्यं त्रयोदशं, गुरु तथा युगग्रहैः = चतुर्भि-
नवभिश्चाक्षरैः, यतिविरतिः = विरामः सा प्रभावती, लक्षिता = कथिता । यथा—

यस्यां प्रिये प्रथमकमक्षरद्वयम् । इत्यादि ।

S S I S I I I S I S I S

भाषार्थः—हे प्रिये, अमृतलते ! जिसमें प्रथम, द्वितीय, चतुर्थं, नवम, एकादश तथा अन्त्य (तेरहवां) वर्णं गुरु हो, उसे प्रभावती छन्द कहा गया है ।
(इसके प्रत्येक चरण में १३ अक्षर जगण, भगण, सगण, जगण और एक गुरु के क्रम से होते हैं । यति ४, ९ पर) ॥ ३४ ॥

प्रहर्षिणीछन्दः (त्रयोदशाक्षरा वृत्तिः)

आद्यं चेन्नितयमथाष्टमं नवान्त्यं

द्वे चान्त्ये गुरुविरतौ सुभाषिते ! स्यात् ।

विश्रामो भवति महेशनेत्रदिग्भिः

विज्ञेया ननु सुदति ! प्रहर्षिणी सा ॥ ३५ ॥

अन्वयः—हे सुभाषिते ! सुदति ! आद्यं त्रितयं, अथ अष्टमं नवान्त्यं, द्वे चान्त्ये गुरुविरतौ स्यात् । महेशनेत्रदिग्भिः विश्रामो भवति, सा ननु प्रहर्षिणी विज्ञेया ॥ ३५ ॥

व्याख्या—सु शोभनं भाषणं यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । शोभना दन्ताः यस्याः सा तत्सम्बुद्धी । आद्यं त्रितयं = प्रथमतो वर्णत्रयं, अथ = अनन्तरं अष्टमं, नवान्त्यं = दशमं, चान्त्ये द्वे = द्वादशत्रयोदशौ, एते वर्णाः गुरुवो भवन्ति । तन्मध्ये सर्वे लघवो भवन्ति । महेशनेत्रैः = वर्णत्रयान्तरं, दिग्भिः = दशवर्णान्तरं च विश्रामः स्यात् सा प्रहर्षिणी विज्ञेया । तथा चोक्तं छन्दोमन्त्रज्याम्—

त्रयाशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।

S S S I I I S I S I S S

वृत्तरत्नाकरे च—स्त्री औ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम् ।

भाषार्थः—हे मधुरभाषिणी ! जिस छन्द में प्रथम तीन, अष्टम, दशम, तथा बारहवाँ और तेरहवाँ अक्षर गुरु हो और तीसरे तथा दसवें अक्षर पर विराम हो, उसे निश्चय ही प्रहर्षिणी छन्द जानो । (इसके प्रत्येक चरण में मगण, नगण, जगण, रगण, और एक गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं) ॥ ३५ ॥

वसन्ततिलका (चतुर्दशाक्षरावृत्तिः)

आद्यं द्वितीयमपि चेद्गुरु तच्चतुर्थं
यत्राष्टमं च दशमान्त्यमुपान्त्यमन्त्यम् ॥
कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतङ्गजेन्द्रे !

कान्ते वसन्ततिलकां किल तां वदन्ति ॥ ३६ ॥

अन्वयः—कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतङ्गजेन्द्रे ! कान्ते ! यत्र आद्यं, द्वितीयमपि, तत् चतुर्थं, अष्टमं च, दशमान्त्यं, उपान्त्यं, अन्त्यं च गुरु तां वसन्त-तिलकां वदन्ति किल ॥ ३६ ॥

व्याख्या—काम एवाङ्कुशस्तेनाङ्कुशिता वशीकृता कामिन एव मतङ्गजेन्द्राः यया सा तत्सम्बुद्धो, कान्ते = प्रिये ! यत्र = यस्यां वृत्तौ, आद्यं = प्रथमं, द्वितीयं, चतुर्थं, अष्टमं, दशमान्त्यं = एकादशं, उपान्त्यं = त्रयोदशं, अन्त्यं = चतुर्दशं—एते वर्णाः गुरवो भवन्ति, तां वसन्ततिलकां-वदन्ति 'बुधा' इति शेषः । यथा—^१

आद्यं द्वितीयमपि चेद्गुरु तच्चतुर्थम् । इत्यादि ।

S S | | | | S | | S | S S

यथा वृत्तरत्नाकरे—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

छन्दोमञ्जर्याञ्च—ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौ गः ।

भाषार्थः—हे कामिनि, प्रिये ! जहाँ पर प्रथम, द्वितीय, तथा चतुर्थं, अष्टम, ग्यारहवाँ, तेरहवाँ और चौदहवाँ—यह अक्षर गुरु हो, उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं । (इसके प्रत्येक चरण में १४ अक्षर क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु होते हैं) ॥ ३६ ॥

१. यथा च नीतिशतके—

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।

अथैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मालिनी (पंचदशाक्षरावृत्तिः)

प्रथममगुरुषट्कं विद्यते यत्र कान्ते !

तदनु च दशमं चेदक्षरं द्वादशान्त्यम् ॥

करिभिरथ तुरङ्गैर्यत्र कान्ते । विरामः

सुकविजनमनोज्ञा मालिनी सा प्रसिद्धा ॥ ३७ ॥

अन्वयः—कान्ते ! यत्र प्रथमं, षट्कं अगुरु, तदनु दशमं, द्वादशान्त्यं च अक्षरं (लघु) करिभिरथ तुरङ्गैः विरामः, सुकविजनमनोज्ञा सा मालिनी प्रसिद्धा ॥ ३७ ॥

व्याख्या—हे कान्ते ! प्रथमं षट्कं अगुरु = ह्रस्वं भवति तदनु दशमं, द्वादशान्त्यम् = त्रयोदशं च ह्रस्वं भवति । करिभिः = अष्टभिः, तुरङ्गैः = सप्तभिः, विरामः = विश्रामः, सा मालिनी । यथा—

प्रथममगुरु षट्कं विद्यते यत्र कान्ते । इत्यादि ।

। । । । । S S S । S S । S S

तदुक्तं वृत्तरत्नाकरे—न न मय य युतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।

। । । । । । S S S । S S । S S

भाषार्थः—हे प्रिये ! जहाँ आदि के छः अक्षर, तदनन्तर दशम और त्रयोदश भी ह्रस्व हो तथा न और ण पर यदि हो वह छन्द मालिनी नाम से प्रसिद्ध एवं सुकवियों को अधिक प्रिय है (इसमें प्रत्येक चरण में १५ अक्षर नगण, नगण, मगण, यगण और षगण होते हैं) ॥ ३७ ॥

हरिणीछन्दः (सप्तदशाक्षरावृत्तिः)

सुमुखि ! लघवः पञ्च प्राच्यास्ततो दशमान्तिकं

तदनु ललितालापे ! वर्णौ यदि त्रिचतुर्दशौ ।

प्रभवति पुनर्यत्रोपान्त्यः स्फुरत्करकङ्कणे

यतिरपि रसैर्वदैरश्वैः स्मृता हरिणीति सा ॥ ३८ ॥

अन्वयः—हे सुमुखि, स्फुरत्करकङ्कणे, ललितालापे ! यत्र प्राच्याः पञ्च लघवः, ततः दशमान्तिकं, तदनु त्रिचतुर्दशौ वर्णौ, पुनः उपान्त्यः, यतिरपि रसैर्वदैरश्वैः प्रभवति, सा हरिणी स्मृता ॥ ३८ ॥

व्याख्या—यत्र = यस्यां वृत्ती । प्राच्याः = पूर्वाः पञ्चवर्णाः लघवः सन्ति । ततः = तदनन्तरं, दशमान्तिकं = एकादशः, तदनु = पश्चात्, त्रिचतुर्दशौ = त्रयो-

दशचतुर्दशी, लघू, पुनः उपान्त्यः = षोडशोऽपि लघु प्रभवति । यतिः रसैः = षड्भिः, वेदैः = चतुर्भिः, अश्वैः = सप्तभिश्च । सा हरिणीवृत्तम् । यथा—

सुमुखि लघवः पञ्च प्राच्यास्ततो दशमान्तिकं । इत्यादि

।।।।। S S S S । S ।। S । S

तथा छन्दोमञ्जर्याम्—न-स-म-र-स-ला-गः षड्वेदैर्हृयेहरिणी मता ।

।।।।। S S S S S । S । S । S

भाषार्थः—हे सुमुखि, मधुरभाषिणि ! जिस छन्द में प्रथम पाँच वर्ण लघु हों, तदनन्तर ग्यारहवाँ, तेरहवाँ और चौदहवाँ तथा अन्तिम अक्षर सोलहवाँ भी लघु हो तथा जिसमें ६, ४, और ७ अक्षरों पर विराम हो, उसे हरिणी छन्द कहा गया है । (इसके प्रत्येक पाद में १७ अक्षर क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और एक लघु तथा एक गुरु होते हैं) ॥ ३९ ॥

शिखरिणी (सप्तदशाक्षरावृत्तिः)

यदा पूर्वो ह्रस्वः कमलनयने ! षष्ठकपरा—

स्ततो वर्णाः पञ्च प्रकृतिसुकुमाराङ्गि ! लघवः ॥

त्रयोऽन्ये चोपान्त्याः सुतनु ! जघनाभोगसुभगे ।

रसैरुद्वैर्यस्यां भवति विरतिः सा शिखरिणी ॥ ३९ ॥

अन्वयः—हे कमलनयने, प्रकृतिसुकुमाराङ्गि ! यदा पूर्वो ह्रस्वः, ततः षष्ठकपरा पञ्च वर्णाः लघवः, अन्ये उपान्त्याः त्रयः (तथा) हे सुतनु ! जघनाभोगसुभगे ! यस्यां रसैरुद्वैः विरतिः भवति, सा शिखरिणी ॥ ३९ ॥

व्याख्या—पूर्वः = प्रथमः, षष्ठकपरा = षष्ठः पञ्चवर्णाः, सप्तमष्टम नवम-दशमैकादशा लघवः सन्ति । अन्त्ये उपान्त्याः त्रयो वर्णाः = चतुर्दश पञ्चदश-षोडशा लघवः, यत्र च रसैः = षड्भिः, रुद्वैः = एकादशैः, विरतिः = यतिः, भवति, शिखरिणी । यथा—

यदा पूर्वो ह्रस्वः कमलनयने षष्ठकपरा । इत्यादि

। S S S S ।।।।। S S ।।। S

तथा चोक्तं वृत्तरत्नाकरे—रसै रुद्वैरिच्छन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।

। S S S S ।।।।। S S ।।। S

भाषार्थः—हे कमलनयने, कोमलाङ्गि ! जहाँ पर पूर्व वर्ण ह्रस्व हो, पुनः छः के बाद पाँच वर्ण (अर्थात् सात, आठ, नौ, दस और ग्यारहवाँ) भी लघु हों तथा अन्त्य से पूर्व के तीन वर्ण (अर्थात् चौदह, पन्द्रह और सोलहवाँ) भी

लघु हो तथा हे सुतनु ! हे कामिनि ! छः और ग्यारहवें अक्षर पर विराम हो, उमे शिखरिणी छन्द कहा गया है । (इसके प्रत्येक चरण में १७ अक्षर क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और एक लघु तथा एक गुरु होते हैं) ॥३९॥

पृथ्वी (सप्तदशाक्षरा वृत्तिः)

द्वितीयमलिकुन्तले ! यदि षडष्टमं द्वादशं
चतुर्दशमथ प्रिये ! गुरु गभीरनाभिहृदे ! ॥

सपञ्चदशमन्तिकं तदनु यत्र कान्ते ! यति-
गिरीन्द्रफणिभृत्कुलैर्भवति सुभ्रु ! पृथ्वी हि सा ॥ ४० ॥

अन्वयः—हे अलिकुन्तले, प्रिये, गभीरनाभिहृदे, कान्ते, सुभ्रु ! यदि द्वितीयं, षड, अष्टमं, द्वादशं, अथ चतुर्दशं गुरु, तदनु सपञ्चदशं अन्तिकं, यत्र गिरीन्द्र-फणिभृत्कुलैः यतिः सा पृथ्वी हि ॥ ४० ॥

व्याख्या—अलिबच्छयामाः कुन्तला यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ । यदि द्वितीय-मक्षरं गुरु, अथ = अनन्तरे, षडष्टमं द्वादशं, चतुर्दशं च गुरु स्यात् तथा पञ्चदशेन सहितं अन्तिकं च गुरु स्यात् । यत्र गिरीन्द्रैः = अष्टभिः, फणिभृत्कुलैः = नवभिश्च यतिः = विरामः । सा पृथ्वीछन्दः । यथा—

द्वितीयमलिकुन्तले, यदि षडष्टमं द्वादशं । इत्यादि ।

1 S 1 1 S 1 S 1 1 1 S 1 S 1 S

तदुक्तं वृत्तरत्नाकरे—जसौ जसयला वसु ग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।

1 S 1 1 S 1 S 1 1 1 S 1 S S 1 S

भाषार्थः—हे अलिकुन्तले, प्रिये । यदि दूसरा, छठा, आठवाँ, बारहवाँ तथा चौदहवाँ अक्षर गुरु हो, तदनन्तर पन्द्रहवाँ और अन्त्य अक्षर भी गुरु हो तथा आठवें और नवें अक्षर पर यति हो, वह पृथ्वी छन्द होता है । (इसके प्रत्येक चरण में १७ अक्षर क्रमशः—जगण, सगण, जगण, सगण, मगण होते हैं) ॥

मन्दाक्रान्ता (सप्तदशाक्षरावृत्तिः)

चत्वारः प्राक् सुतनु ! गुरवो द्वौ दशैकादशौ चे-
न्मुग्धे वर्णौ तदनु कुमुदामोदिनि ! द्वादशान्त्यौ ॥

1. निर्णयसागरमुद्रणालय द्वारा प्रकाशित, 'श्रुतबोध' के अन्तर्गत मन्दाक्रान्ता के लक्षण में यहाँ 'द्वादशैकादशौ चेत्' ऐसा पाठ दिया गया है, जो छन्दोलक्षण में सर्वथा भिन्न अर्थ को प्रकट करता है । श्रीनारायण पण्डित ने भी अपनी संस्कृत व्याख्या में यही पाठ स्वीकार किया है और तदनुसार श्रीवज्रल भट्टाचार्य ने हिन्दी अनुवाद

तद्वच्चान्त्यौ युगरसहयैर्यत्र कान्ते ! विरामो
मन्दाक्रान्तां प्रवरकवयस्तन्वि ! तां सङ्गिरन्ते ॥ ४२ ॥

अन्वयः—सुतनु ! मुग्धे ! कुमुदामोदिनि ! कान्ते ! तन्वि ! चेत् (यत्र)
प्राक् चत्वारः गुरवं, दशैकादशौ द्वौ, तदनु द्वादशान्त्यौ वर्णौ, तद्वत् च अन्त्यौ ।
यत्र युगरसहयैः विरामः, तां प्रवरकवयः मन्दाक्रान्तां सङ्गिरन्ते ॥ ४१ ॥

व्याख्या—हे सुतनु=सुष्ठु तनु र्यस्या सा तत्सम्बुद्धौ । तन्वि=कृशाङ्गि, कुमुदा-
मोदिनि=कुमुदवदामोदः सुगन्धिर्धस्याः सा तत्सम्बुद्धौ । हे मुग्धे, हे कान्ते = प्रिये !
चेत् = यदि, यत्र=यस्यां वृत्तौ । प्राक् चत्वारः = प्रथमाः चत्वारो वर्णाः, गुरवः =
द्विमात्रिका स्युः, तदनु दशैकादशौ द्वौ गुरु, द्वादशान्त्यौ = द्वादशवर्णस्योत्तरस्थितौ
त्रयोदशचतुर्दशौ वर्णौ च गुरु, तदनु = तद्वत्, अन्त्यौ = अन्तिमौ षोडशसप्तदशौ
च गुरु स्याताम् । तत्र युग-रस-हयैः = चतुःषट्-सप्तभिः क्रमेण विरामः = विश्रामो
यतिर्वा भवति तां, प्रवरकवयः = सुकविजनाः, 'मन्दाक्रान्तां' सङ्गिरन्ते =
कथयन्ति । यथा—

चत्वारः प्राक् सुतनु गुरवो द्वौ दशैकादशौ चेत् । इत्यादि
S S S S I I I I I S S I S S I S S

तथा च वृत्तरत्नाकरे—

मन्दाक्रान्ता जलधिषड्गैर्भौ नती ताद् गुरु चेत् ।
S S S S I I I I I S S I S S I S S

किया है, ऐसा प्रतीत होता है कि इनका इस ओर ध्यान ही नहीं गया परन्तु
श्रीनारायण पण्डित ने इस छन्द की संस्कृत व्याख्या के अन्त में वर्णों का क्रम—

मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, ग ग
S S S S I I I I I S S I S S I S S

इस प्रकार बताया है, इसके अनुसार दसवाँ और ग्यारहवाँ अक्षर ही गुरु
होना चाहिये, जबकि मूलपाठ में 'द्वादशैकादशौ' पाठ ही स्वीकार किया गया है ।
अतः अर्थसङ्गति के अनुकूल हमने वहाँ 'द्वौ दशैकादशौ चेत्' इस प्रकार पाठ ग्रहण
किया है और 'दशैकादशौ द्वौ वर्णौ' ऐसी अर्थसङ्गति करने पर कोई चुट्टि नहीं
रह पाती ।

१. प्रसिद्धोदाहरणं यथा—

शान्ताकारं, भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं, गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं, कमलनयनं, योगिभिर्ध्यातगम्यं,
वन्दे विष्णुं, भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम् ॥

छन्दोमञ्जरी च —

मन्दाक्रान्ताम्बुधि-रस-नगै-र्यो भ-नी-ती-गयुग्मम् ।

भाषार्थः— हे सुतनु ! प्रिये ! जिसके छन्द के प्रथम चार अक्षर गुरु हों, उसके बाद दसवाँ और ग्यारहवाँ, फिर तेरहवाँ और चौदहवाँ, तदनन्तर सोलहवाँ और सत्रहवाँ अक्षर भी गुरु हो उसे सुयोग्य कविजन 'मन्दाक्रान्ता' छन्द कहते हैं ।

(इस प्रकार प्रस्तुत छन्द में क्रमशः मगण, भगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं और चार, छह तथा सात अक्षरों पर यति होती है)

शार्दूलविक्रीडितं (एकोनविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

आद्याश्चेद्गुरवस्त्रयः प्रियतमे षष्ठस्तथा चाष्टमो ।

नन्वेकादशतस्त्रयस्तदनु चेदष्टादशाद्यौ ततः ॥

मार्तण्डैर्मुनिभिश्च यत्र विरतिः पूर्णेन्दुबिम्बानने ।

तद्वृत्तं प्रवदन्ति काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४२ ॥

अन्वयः— हे प्रियतमे ! पूर्णेन्दुबिम्बानने ! चेत् आद्याः, त्रयः, गुरवः तथा षष्ठः अष्टमश्च, एकादशतस्त्रयः, तदनु चेत् अष्टादशाद्यौ, ततः यत्र मार्तण्डैः, मुनिभिश्च विरतिः, तद्वृत्तं काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितं प्रवदन्ति ॥ ४२ ॥

व्याख्या—आद्याः त्रयः = प्रथमद्वितीयतृतीयाः, षष्ठः, अष्टमः, एकादशतस्त्रयः = द्वादशत्रयोदशचतुर्दशः, अष्टादशाद्यौ = षोडशसप्तदशी च एते वर्णाः गुरवः सन्ति । मार्तण्डैः = द्वादशैः, मुनिभिः = सप्तभिः च विरतिः = विरामः । तत् शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् । यथा—

आद्याश्चेद् गुरवस्त्रयः प्रियतमे षष्ठस्तथा चाष्टमो ।

S S S I I S I S I I I S S S I S S I S

तथा च छन्दोमञ्जर्या वृत्तरत्नाकरे च—

सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ।

S S S I I S I S I I I S S S I S S I S

भाषार्थः— हे प्रियतमे ! हे चन्द्रमुखि ! यदि प्रथम तीन वर्ण, षष्ठ, अष्टम, तथा बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ और सोलहवाँ तथा सत्रहवाँ अक्षर गुरु हो तथा जहाँ बारह और सात अक्षरों पर विराम हो, उसे काव्यरसिक लोग शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं । (इस छन्द के प्रत्येक चरण में १९ अक्षर क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और एक गुरू होता है) ॥ ४२ ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्रग्धरा । एकविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

त

चत्वारो यत्र वर्णाः प्रथममलघवः षष्ठकः सप्तमोऽपि ।
 द्वौ तद्वत्पोडशाद्यौ मृगमदमुदिते ! पोडशान्त्यौ तथान्त्यौ ॥
 रम्भास्तम्भोरुकान्ते ! मुनिमुनिमुनिर्निर्दृश्यते चेद्विरामो ।
 बाले ! वन्द्यैः कवीन्द्रैः सुतनु ! निगदिता स्रग्धरा सा प्रसिद्धा ॥ ४३ ॥

इति श्रीमन्महाकविकालिदासप्रणीतः श्रुतबोध-

नामकछन्दोग्रन्थः समाप्तः

अन्वयः—हे मृगमदमुदिते ! रम्भास्तम्भोरुकान्ते ! बाले ! सुतनु ! यत्र
 प्रथमं चत्वारो वर्णाः अलघवः, षष्ठकः, सप्तमः अपि, तद्वत् पोडशाद्यौ द्वौ,
 पोडशान्त्यौ, अन्त्यौ (च) मुनिमुनिमुनिभिः चेत् विरामो दृश्यते, वन्द्यैः कवीन्द्रैः
 निगदिता सा स्रग्धरा प्रसिद्धा ।

व्याख्या—मृगस्य मदेन मुदिता या सा तत्सम्बुद्धौ । रम्भायाः स्तम्भवदूर्वोः
 कान्तिर्यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ । प्रथमं चत्वारो वर्णा अलघवः = गुरवः, षष्ठकः,
 सप्तमः अपि तद्वत् गुरुः । तथा पोडशाद्यौ = चतुर्दशपञ्चदशौ, पोडशान्त्यौ =
 सप्तदशाष्टदशौ, अन्त्यौ द्वौ च गुरु स्याताम् । मुनिमुनिमुनिभिः = सप्तसप्तसप्तभिः
 विरामः = यतिः, सा स्रग्धरा इति वन्द्यैः = पूज्यैः, कवीन्द्रैः निगदिता = कथिता ।
 यथा— चत्वारो यत्र वर्णाः प्रथममलघवः षष्ठकः सप्तमोऽपि । इत्यादिषु ।

S S S S I S S I I I I I S S I S S I S S S

यथा वृत्तरत्नाकरे—

ओ भनी यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

S S S S I S S I I I I I S S I S S I S S I S S

भाषार्थः—हे प्रिये ! जहाँ पर आदि के चार वर्ण गुरु हों, उसी प्रकार
 छठा, सातवाँ, चौदहवाँ तथा पन्द्रहवाँ एवं सत्रहवाँ तथा अठारहवाँ और अन्त
 के दो बीसवाँ और इक्कीसवाँ वर्ण भी गुरु होता है तथा जिसमें ७, ७, ७, पर
 विराम हो, वह वन्दनीय कवियों द्वारा कथित छन्द स्रग्धरा नाम से सुप्रसिद्ध है ।

(इस छन्द के प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं, जो क्रमशः मगण, रगण,
 भगण, नगण, यगण, यगण, यगण हैं) ॥ ४३ ॥

इति श्रीमन्महाकविकालिदासप्रणीते श्रुतबोधे

'कृष्णा' संस्कृत-हिन्दी टीका समाप्ता ।



॥

त्र
ी,
द्रः

रिः
ः,
=
रः
।

र
र
र
।

- १ रघुवंशम् । महाकविकालिदासविरचितम्, 'सज्जीविनी' तथा 'सुधा'
व्याख्या सहित, पं० ब्रह्मशङ्कर मिश्र संपादित, प्रथम सर्ग १-५०
द्वितीय सर्ग १-५०, १-५ सर्ग ७-५०, १-२ सर्ग ३-००,
२-३ सर्ग ३-००, १-४ सर्ग ६-००, प्रत्येक सर्ग १-५०
- २ किरातार्जुनीयम् । महाकविभारविविरचितम्, घण्टापथ-सुधा-व्याख्या
सहितम्, व्या० पं० गङ्गाधर मिश्र १-२ सर्ग ३-००, १-३ सर्ग ४-५०,
प्रथम सर्ग १-५०, द्वितीय सर्ग १-५०, तृतीय सर्ग १-५०
- ३ वृत्तरत्नाकरः । नारायणी-मणिमयी-हिन्दीटीकाद्वयोपेतः, व्याख्या०—
पं० केदारनाथ शर्मा ६-००
- ४ नागानन्दनाटकम् । श्री हर्षदेवविरचितम्, भावार्थदीपिका-संस्कृत
हिन्दीटीका सहित, व्याख्या०—आचार्य बलदेव उपाध्याय ६-००
- ५ मेघदूतम् । कालिदासविरचितम्, 'सज्जीविनी' तथा 'विद्योतिनी'-
हिन्दी व्याख्या सहित, पं० केदारनाथ शर्मा संपादित ३-००
- ६ अमरकोशः । श्री अमर सिंह विरचित, मूलमात्र प्रथम काण्ड ०-२५
द्वितीय काण्ड ०-४०, तृतीय काण्ड ०-५०
- ७ व्यक्तिविवेकः । हिन्दी व्याख्या०—डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी २५-००
- ८ याज्ञवल्क्यस्मृतिः । 'प्रकाश'-हिन्दी टीका सहित, व्याख्या०—
डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय (आचाराध्याय ८-००) २५-००
- ९ अलङ्कारसर्वस्वम् । हिन्दी व्याख्या०—डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ३०-००
- १० जानकीहरणम् । 'सुबोधिनी'-हिन्दी व्याख्या सहित, डॉ० यदुनन्दन
मिश्र संपादित १-२ सर्ग ८-००
- ११ नलचम्पू अथवा दमयन्ती कथा । त्रिविक्रमभट्ट विरचित, हिन्दी
व्याख्या०—श्री कैलास पति त्रिपाठी प्रथम उच्छ्वास ४-००
१-२ उच्छ्वास ६-००, सम्पूर्ण ३०-००
- १२ कर्णभारम् । महाकविभासविरचितम् । अंग्रेजी-हिन्दी व्याख्या तथा
विस्तृत भूमिका सहित, व्याख्या०—डॉ० सुधाकर मालवीय ३-००

प्राप्तिस्थान—चौखम्भा ओरियन्टलिया, वाराणसी